REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 10 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2021

मुगल साम्राज्य की उपलब्धियाँ – एक अध्ययन

डॉ. अजीत सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष (इतिहास)
बुन्देलखण्ड महाविद्यालय, झाँसी.

प्रस्तावना–

मध्य एशिया में दो महान जातियों का उत्कर्ष हुआ जिनका विश्व के इतिहास पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। इनमें से एक का नाम तुर्क और दूसरी का मंगोल था। तुर्कों का मूल स्थान तुर्किस्तान और मुगलों या मंगोलों का मंगोलिया था। यह दोनों ही जातियाँ प्रारम्भ में खानाबदोश थीं और अपनी जीविका की खोज में इधर–उधर घूमा करती थीं। यह बड़ी ही वीर, साहसी तथा लड़ाकू जातियाँ थीं और युद्ध तथा लूट–मार करना इनका मुख्य पेशा था। यह दोनों ही जातियाँ कबीले बनाकर रहती थीं और प्रत्येक कबीले का एक सरदार होता था जिनके प्रति कबीले के लोगों की अपार भक्ति होती थी। प्रायः यह कबीले आपस में लड़ा करते थे परन्तु कभी–कभी वह वीर तथा साहसी सरदारों के नेतृत्व में संगठित भी हो जाया करते थे। धीरे–धीरे इन खानाबदोश जातियों ने अपने बाहुबल से अपनी राजनीतिक संस्था स्थापित कर ली और कालान्तर में इन्होंने न केवल एशिया के बहुत बड़े भाग पर वरन दक्षिण यूरोप में भी अपनी राज–सत्ता स्थापित कर ली। धीरे–धीरे इन दोनों जातियों में वैमनस्य तथा शत्रुता बढ़ने लगी और दोनों एक–दूसरे की प्रतिद्वन्दी बन गयीं। तुर्क लोग मुगलों को घोर घृणा की दृष्टि से देखते थे। इसका कारण यह था कि वे उन्हें असभ्य, क्रूर तथा मानवता का शत्रु मानते थे।

तुर्कों में अमीर तैमूर तथा मुगलों में चंगेज़ खां के नाम अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। यह दोनों ही बड़े वीर, विजेता तथा साम्राज्य, संस्थापक थे। इन दोनों ने भारत पर आक्रमण किया था और उसके इतिहास को प्रभावित किया था। चंगेज़ खाँ ने दास–वंश के शासक इल्तुतमिश के शासन काल में और तैमूर ने तुगलक वंश के शासक महमूद के शासनकाल में भारत में प्रवेश किया था। यद्यपि चंगेज़ खाँ पंजाब से वापस लौट गया था परन्तु तैमूर ने पंजाब में अपनी राज संस्था स्थापित कर ली थी और वहाँ पर अपना गवर्नर छोड़ गया था। लोदी वंश के पतन के उपरान्त दिल्ली में एक नये राज–वंश की स्थापना हुई जो मुगल राजवंश के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस राजवंश के संस्थापक बाबर थे जो अपने पिता की ओर से तैमूर के और अपनी माता की ओर से चंगेज़ खाँ के वंशज थे। इस प्रकार बाबर की धमनियों में तुर्क तथा मंगोल दोनों के रक्त प्रवाहित हो रहे थे। परन्तु एक तुर्क का पुत्र होने के कारण उसे तुर्क ही मानना चाहिये, न कि मंगोल। अतएव दिल्ली में जिस राज–वंश की उसने स्थापना की उसे तुर्क–वंश कहना चाहिये न कि मुगल–वंश। परन्तु इतिहासकारों ने इसे मुगल राज–वंश के नाम से ही पुकारा है।

मुगल राजवंश का महत्त्व

मुगल राजवंश का भारतीय इतिहास में बहुत बड़ा महत्त्व है। इस राजवंश ने लगभग 300 वर्षों तक भारत में शासन किया। बाबर ने 1526 ई० में दिल्ली में मुगल साम्राज्य की स्थापना की थी और इस वंश का

अन्तिम शासक बहादुर शाह 1858 ई० में दिल्ली के सिंहासन से हटाया गया था। इस प्रकार भारतवर्ष में किसी अन्य मुस्लिम राजवंश ने इतने अधिक वर्षों तक स्वतन्त्रतापूर्वक शासन नहीं किया जितने वर्षों तक मुगल राजवंश ने किया। न केवल काल की दृष्टि से मुगल राजवंश का भारतीय इतिहास में महत्त्व है वरन विस्तार की दृष्टि से भी बहुत बड़ा महत्त्व है। मुगल सम्राटों ने न केवल सम्पूर्ण उत्तरी भारत पर अपना साम्राज्य स्थापित किया वरन दक्षिण भारत के भी एक बहुत बड़े भाग पर उन्होंने अपनी प्रभुत्व शक्ति स्थापित की। मुगल सम्राटों ने जितने विशाल साम्राज्य पर सफ़लतापूर्वक शासन किया उतने विशाल साम्राज्य पर अन्य किसी मुस्लिम राजवंश ने शासन नहीं किया।

शांति तथा सुव्यवस्था के दृष्टिकोण से भी मुगल राजवंश का भारतीय इतिहास में बहुत बड़ा महत्त्व है। मुसलमानों में उत्तराधिकार का कोई निश्चित नियम न होने के कारण सल्तनत काल से राजवंशों का बड़ी तेज़ी से परिवर्तन होता रहा। इसका परिणाम ये होता था कि राज्य में अशान्ति तथा कुव्यवस्था फैल जाती थी और अमीरों तथा सरदारों के षड़यन्त्र निरन्तर चलते रहते थे। मुगल राज्यकाल में एक ही राजवंश का निरंतर शासन चलता रहा। इससे राज्य को स्थायित्व प्राप्त हो गया। इसमें सन्देह नहीं कि मुगलसम्राटों ने साम्राज्यवादी नीति का अनुसरण किया और विजय यात्राएँ की परन्तु वे अपने राज्य में आन्तरिक शान्ति तथा सुव्यवस्था बनाये रखने में पूर्ण रूप से सफल रहे।

इस आन्तरिक शान्ति तथा सुव्यवस्था के परिणाम बड़े महत्त्वपूर्ण हुए। मुगल सम्राटों ने अपने सम्पूर्ण राज्य में एक प्रकार की शासनव्यवस्था स्थापित की, एक प्रकार के नियम लागू किये और एक प्रकार के कर्मचारियों की नियुक्ति की। इससे एकता की भावना को जागृत करने में बड़ा योग मिला। शान्ति तथा सुव्यवस्था के स्थापित हो जाने से देश की आर्थिक उन्नति बड़ी तेज़ी से होने लगी। इससे राज्य के वैभव तथा गौरव में बड़ी वृद्धि हो गई। मुगल सम्राटों का दरबार अपने वैभव तथा अपने गौरव के लिये दूर–दूर तक विख्यात था। वे न केवल स्वयं वरन उनकी प्रजा भी सुखी तथा सम्पन्न थी। दिल्ली, आगरा तथा फ़तेहपुर सीकरी में जिन भव्य भवनों, मस्जिदों, मकबरों तथा राज प्रसादों का निर्माण किया गया है वे उस काल की स्मृति के द्योतक हैं। ताजमहल, तख्तेताऊस, कोहीनूर आदि इस काल की सम्पन्नता के ज्वलंत प्रमाण हैं। सभी ललित कलाओं की इस काल में उन्नति हुई जिनका विकास केवल शान्तिमय वातावरण में ही हो सकता है। साहित्य की चरमोन्नत्ति भी इस काल की सम्पन्नता तथा शान्तिमय वातावरण की द्योतक है। वास्तव में मुगल काल का गौरव अद्वितीय तथा अनुपम है।

मुगल सम्राटों ने भारतीय इतिहास में एक नई नीति का सूत्रपात किया। वह नीति थी सहयोग तथा सहिष्णुता की। इस काल में सल्तनत काल की भाँति धार्मिक अत्याचार नहीं किये गये। यद्यपि बाबर ने भारत में हिन्दुओं के साथ जो युद्ध किये थे उन्हें उसने 'जेहाद' का रूप दिया था परन्तु इसकी यह भावना केवल युद्ध के समय तथा रण–क्षेत्र में रहती थी, शान्ति काल में नहीं। हुमायूँ ने जीवन–पर्यन्त अफ़गानों के साथ युद्ध किया और अपनी हिन्दु प्रजा के साथ उसने किसी प्रकार का अत्याचार नहीं किया। उसके पुत्र अकबर ने तो पूर्ण रूप से धार्मिक सहिष्णुता तथा सुलह–कुल की नीति का अनुसरण किया। उसने हिन्दुओं का आदर तथा विश्वास किया और उन्हें राज्य में ऊँचे–ऊँचे पद पर नियुक्त किया। इससे मुगल राज्य को सुदृढ़ता प्राप्त हो गई। जब तक अकबर की उस उदार नीति का अनुसरण किया गया तब तक मुगल साम्राज्य सुदृढ़ तथा सुसंगठित बना रहा परन्तु जब औरंगज़ेब के शासन काल में इस नीति को त्याग दिया गया तब मुगल–साम्राज्य पतनोन्मुख हो गया।

मुगल राजवंश का एक और दृष्टिकोण से बहुत बड़ा महत्त्व है। इस काल में भारतवासी फिर विदेशों के घनिष्ठ सम्पर्क में आ गये। पूर्व तथा पश्चिम के देशों के साथ भारत का व्यापारिक तथा सांस्कृतिक सम्बन्ध फिर स्थापित हो गया। पाश्चात्य देशों से यात्री लोग भारत में आने लगे जिससे भारतीयों के साथ उनका व्यापारिक सम्बन्ध बढ़ने लगा और विचारों का आदान–प्रदान भी होने लगा। इसका अन्तिम परिणाम ये हुआ कि भारत में यूरोपवासियों की राज्य–संस्थाएँ स्थापित हुईं और भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति पर पाश्चात्य देशों की सभ्यता तथा संस्कृति का बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा।

मुगलकालीन प्रशासनिक उपलब्धियाँ

(1) मुगल साम्राज्य में सम्राट सर्वोपरि था। वह सेना की सहायता से शासन चलाता था।

(2) सम्राट की सहायता हेतु अनेक मंत्री होते थे। सबसे ऊंचा पद वकील/वजीर (प्रधानमंत्री) का होता था, जो सभी विभागों की देखभाल करता था एवं अन्य कर्मचारियों की नियुक्ति में अपनी राय देता था।
(ब) दीवान या वजीर राज्य की आय–व्यय का हिसाब रखता था।
(स) 'मीर–बख्शी' सैन्य विभाग का अध्यक्ष होता था, यह सैन्य विभाग की देखभाल एवं सैनिकों को वेतन देना तथा मनसबदारों की सूची सम्राट को भेजने का कार्य करता था।
(3) घरेलू विभाग का प्रधान होता था, जो शाही भोजनालय एवं राजमहल की अन्य आवश्यकताओं का प्रबन्ध करता था। सद्र–ए–सुदूर, दान विभाग, न्याय एवं शिक्षा–विभाग का कार्य देखता था तथा काजी–उल–कजात न्याय विभाग का अध्यक्ष होता था।
(4) सम्राट अकबर ने मुगल साम्राज्य में प्रांतीय शासन व्यवस्था प्रारंभ की। उसने अपने साम्राज्य को 18 सूबों में विभक्त किया, जिनमें केन्द्र समान प्रशासन व्यवस्था थी।

सामाजिक उपलब्धियाँ

सल्तनत काल की तरह मुगलकाल में समाज, हिन्दू व मुस्लिम दो प्रमुख समाजों में बंटा था। समाज में सामंत, अमीर वर्ग तथा जागीरदारों का वर्चस्व था। ये सम्राट की तरह बड़ी शान–शौकत से रहते थे। मध्यम वर्ग में शासकीय कर्मचारी, शिल्पकार, छोटे–छोटे दुकानदार, सामान्य व्यापारी आदि सम्मिलित थे। निम्न वर्ग में कृषक, श्रमिक व दैनिक मजदूरी के कारीगर व सेवक आदि थे। हिन्दू समाज जाति–प्रथा पर आधारित था। जातिगत बंधन कठोर थे। ब्राह्मण व क्षत्रियों का समाज में ऊँचा स्थान था। मुसलमानों में जातिगत भेदभाव, शिया व सुन्नी मतभेद बढ़ रहे थे।

समाज में स्त्रियों की दशा में अत्यंत गिरावट आई थी। पर्दा–प्रथा, बहु विवाह, सती–प्रथा, बाल–विवाह, जौहर–प्रथा जैसी बुराईयाँ समाज में व्याप्त थीं। स्त्रियों की शिक्षा का कोई विशेष प्रबंध नहीं था। उच्चकुल की लड़कियाँ अपने घरों में शिक्षा पाती थीं और साधारण परिवार की लड़कियाँ शिक्षा से वंचित रह जाती थी। शाकाहारी एवं माँसाहारी दोनों प्रकार का भोजन समाज में प्रचलित था। सूती, ऊनी, रेशमी, रंगीन व सफेद कपड़ों का प्रचलन था। नुकीली जूतियाँ व लकड़ी की खड़ाऊं पहनी जाती थी। चौगान (पोलो), शिकार, पशुदौड़, घुड़सवारी, शतरंज, चौपड़, ताश, मेले व त्यौहार आदि मनोरंजन के प्रमुख साधन थे।

आर्थिक उपलब्धियाँ

(1) मुगल काल में कृषि प्रमुख व्यवसाय था। गेहूँ, चावल, जौ, ज्वार, मक्का, बाजरा, कपास, चना, गन्ना, विभिन्न दालें, तिलहहन, सन, नील, अफीम आदि विभिन्न प्रकार की फसलें उत्पन्न की जाती थी। उपज का 1/2 अथवा 1/3 भाग लगान तथा व्यापार कर, राज्य की आय के प्रमुख साधन थे।
(2) हस्तशिल्प उद्योग, काष्ठ उद्योग, व वस्त्र उद्योग उन्नत अवस्था में थे।
(3) भारत से विदेशों को सूती वस्त्र, मलमल, गरम मसाले, हल्दी, नमक, शोर, नील, अफीम, चीनी, मिश्री, गोंद, हीरेमोती, औषधियाँ आदि का निर्यात किया जाता था तथा सोना–चाँदी, ताँबा, सीसा, इस्पात, काँच, दर्पण, शराब, घोड़े, मूंगा, पारा आदि का आयात किया जाता था।

धार्मिक उपलब्धियाँ

सल्तनत काल की तरह मुगल सम्राट इस्लाम धर्म के कट्टर अनुयायी थे। अकबर ने सुव्यवस्थित शासन चलाने के लिए कूटनीति का सहारा लेते हुए, सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता की नीति अपनाई और फतेहपुर सीकरी में इबादत खाना (उपासनाग्रह) का निर्माण किया। विभिन्न धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर दीन–ए–इलाही नामक पंथ चलाया। जहाँगीर व शाहजहाँ ने अकबर की इसी नीति को आंशिक रूप से अपनाया। औरंगजेब ने हिन्दुओं के प्रति असहिष्णुता की नीति का बर्ताव किया। उन पर अनेक प्रतिबंध लगाये, ज़जिया कर पुनः लगाया तथा उनके धार्मिक स्थलों पर आक्रमण किए। हिन्दुओं में वैष्णव व शैव मत अधिक प्रचलित थे। वैष्णब मत में कृष्ण व राम के पुजारियों की संख्या का बाहुल्य था। अनेक पवित्र स्थलों पर भगवान शिव की पूजा की जाती थी। तांत्रिक संप्रदाय का प्रचार–प्रसार था।

जैन धर्म का समाज में बड़ा महत्व था, जैन और हिन्दुओं में तीर्थ यात्रा का प्रचलन था। बौद्ध धर्म का भारत में लगभग ह्रास हो चुका था। इस काल के प्रमुख भक्ति संत तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, मलूकदास, दादू, रैदास आदि हुए, जिन्होंने जन–साधारण को ईश्वर प्रेम के साथ–साथ राष्ट्र प्रेम का संदेश दिया। सूफी संतों में मुइनुद्दीन चिश्ती, शाह हुसैन आदि प्रमुख संत हुए, जिन्होंने भक्ति व प्रेम के द्वारा ईश्वर के निकट जाने का मार्ग बताया।

शैक्षिक व साहित्यिक उपलब्धियाँ

(1) मुगल काल में फारसी एवं तुर्की के साथ–साथ हिन्दी, संस्कृत, बंगला एवं पंजाबी साहित्य का यथेष्ट विकास हुआ। अनेक सम्राटों ने विद्वानों को राजाश्रय दिया।
(2) प्राथमिक शिक्षा मकतब' व उच्च शिक्षा मदरसों में दी जाती थी।
(3) संस्कृत के उत्कृष्ट ग्रंथों का ज्ञान अरबी और फारसी जानने वालों को मिले, इस उद्देश्य से अकबर ने एक अनुवाद विभाग स्थापित करवाया, तथा रामायण, महाभारत, लीलावती, हरिवंशपुराण, पंचतंत्र, अथर्ववेद, राजतरंगिणी आदि का फारसी में अनुवाद करवाया गया।
(4) जहांगीर स्वयं एक विद्वान था। उसने फारसी में 'तुजुक–ए–जहांगीरी' लिखी। शाहजहां ने साहित्य को भरपूर संरक्षण दिया। उसका पुत्र दारा–शिकोह भारतीय ग्रंथों से अत्यधिक प्रभावित हुआ, उसने भगवदगीता व उपनिषदों का फारसी भाषा में अनुवाद करवाया तथा स्वयं भी अनेक ग्रंथों की रचना की।

स्थापत्य एवं कला की उपलब्धियाँ

मुगल शासक स्थापत्य कला प्रेमी थे,जिसकी पुष्टि इस काल में बनी भव्य इमारतों से होती है। इस काल के भवनों में हिन्दू–मुस्लिम स्थापत्य शैलियों का मिश्रण दिखाई देता है। स्थापत्य की दृष्टि से कुछ प्रमुख कलाकृतियाँ निम्नलिखित है–
(1) दिल्ली में हमायूँ का मकबरा, स्थापत्य कला का सुंदर उदाहरण है।
(2) अकबर द्वारा फतेहपुर सीकरी नामक नगर बसाया गया, जिसमें बुलंद दरवाजा" सहित अनेक उत्कृष्ट व सुंदर इमारतों का निर्माण करवाया गया। अकबर द्वारा भवन निर्माण कार्य में अधिकांशतः स्थानीय पत्थर (लाल बलुआ पत्थरों) का उपयोग करवाया गया। उसने चित्रकारों को भी राजाश्रय प्रदान किया।

मुगल काल में शाहजहाँ के समय से ही भवन निर्माण में सफेद संगमरमर व लाल बलुआ पत्थर दोनों का उपयोग किया जाने लगा था। उसने दिल्ली व आगरा में जामा मस्जिद, दिल्ली का लाल किला, शीशमहल, मोती–मस्जिद आदि का सुंदर निर्माण कार्य करवाया इनके शासन काल मुगल स्थापत्य कला का स्वर्ण काल कहा जाता है। औरंगजेब द्वारा मोती मस्जिद का निर्माण करवाया गया।

निष्कर्ष

इस लेख में मुगलकाल शिक्षा, सामाजिक जीवन, आर्थिक जीवन, साहित्य, कला एवं संस्कृति आदि का वर्णन किया गया है। तथापि यह कहना गलत न होगा कि मुगलकालीन संस्कृति ने भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को काफी हद तक प्रभावित किया, जो उस युग की महान देन है। स्थापत्य तथा ललित कला में मुगलकालीन संस्कृति का विकास एवं उत्कर्ष अपने विशिष्ट योगदान रहा है।

संदर्भ सूची

1. मजूमदार, आर. सी. (2007). मुगल शासन, भारतीय विद्या भवन।
2. कोनन, एम. (2007). मध्य पूर्वी परम्पराः एकता और विभिन्नताः प्रश्न, विधियां और संसाधन, वाशिंगटन डी सी।
3. हबीब, आई. (1982). मुगल शासन का मानचित्रः राजनीतिक और अर्थशास्त्रीय मानचित्र।
4. हबीब, आई. (1999). मुगल भारत में कृषक व्यवस्था।
5. प्रेस्टन, डाएना एवं माइकल (1963). ताजमहलः मुगल शासन का उत्साह और कौशल, वाकर एण्ड कं.।